1

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा: अर्थ और महत्व

प्रारम्भिक बाल्यावस्था का अर्थ जन्म से 6 वर्ष तक के शुरूआती जीवन से है। इन वर्षों को निर्माण के वर्ष कहते हैं क्योंकि इन्हीं वर्षों में शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक-संवेगात्मक और भाषा के विकास की नींव पड़ती है। तंत्रिकाविज्ञान के क्षेत्र में हुए अनुसन्धानों ने इन वर्षों के महत्व को इस रूप में माना है कि इन वर्षों में मस्तिष्क का विकास बहुत तीव्र गति से होता है। प्रारम्भिक वर्षों में लालन-पालन, उद्दीप्त करने वाला परिवेश और सीखने के अनुकूलतम अवसर छोटे बच्चों के जीवन पर दीर्घकालिक प्रभाव डालते हैं। इन निर्माणात्मक वर्षों में सभी बच्चों के लिये गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) की सुनिश्चितता द्वारा ऐसा किया जा सकता है। किसी भी प्रकार का वंचन बच्चों के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। अत: ईसीसीई के अर्थ और महत्व को समझना अनिवार्य हो जाता है।

अधिगम प्रतिफल

इस पाठ के अध्ययन के बाद आप–

- ईसीसीई के अर्थ और महत्व का वर्णन करते हैं;
- ईसीसीई के उद्देश्यों की चर्चा करते हैं;
- ईसीसीई के घटकों की व्याख्या करते हैं;
- प्रारंभिक हस्तक्षेप के महत्व को चिन्हित करते हैं; और
- भारतीय और वैश्विक संदर्भों में ईसीसीई का वर्णन करते हैं।

1.1 ईसीसीई का अर्थ और महत्व

1.1.1 ईसीसीई का अर्थ

ईसीसीई शब्द तीन मुख्य शब्दों से मिलाकर बना है– 'प्रारम्भिक बाल्यावस्था', 'देखभाल' और 'शिक्षा'। प्रारम्भिक बाल्यावस्था में जन्म से 6 वर्ष तक की अवधि आती है। ईसीसीई की राष्ट्रीय नीति, 2013 के अनुसार विकासात्मक विशेषताओं के आधार पर प्रारम्भिक वर्षों की तीन उप-अवस्थाएँ हैं जिनमें से प्रत्येक की अपनी आयु के अनुरूप विकासात्मक प्राथमिकताएँ होती हैं। ये उप-अवस्थाएँ हैं– (a) गर्भ धारण से जन्म, (b) जन्म से तीन वर्ष तथा (c) तीन से छह वर्ष। ये जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्थाएँ हैं, क्योंकि इनमें बहुत ही तीव्र गति से वृद्धि और विकास होता है। देखभाल से हमारा आशय सभी बच्चों को प्रेम और स्नेह प्रदान करना तथा स्वस्थ, स्वच्छ, सुरक्षात्मक और सक्रिय वातावरण उपलब्ध कराना है। शिक्षा खोज, प्रयोग, अवलोकन, सहभागिता और अन्तःक्रिया द्वारा ज्ञान, कुशलता, अभिवृत्ति और मूल्यों को गृहण करने की प्रक्रिया है। ये समस्त अनुभव बच्चों को अपने बारे में और दुनिया के बारे में जानने में मदद करते हैं।

अतः ईसीसीई का अर्थ बच्चों को विकास के प्रारम्भिक वर्षों के दौरान स्वास्थ्य, पोषण, देखभाल और सीखने के अवसर उपलब्ध कराना है। खेल-आधारित एवं विकासात्मक जरूरतों के अनुसार गतिविधियों वाला एक सुरक्षात्मक और उद्दीपित वातावरण बच्चों के शारीरिक-गत्यात्मक, संज्ञानात्मक, सामाजिक-सांवेगिक और भाषा के विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

निष्कर्षतः ईसीसीई बच्चों के समग्र विकास के लिए, बाद की अवस्थाओं में अधिगम के लिए और उनके स्वस्ति भाव के लिए आधार तैयार करने का कार्य करती है।

1.1.2 ईसीसीई का महत्व

विकास की अन्य अवस्थाओं की तुलना में बच्चों के जीवन के प्रारंभिक 6 वर्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते हैं। इस दौरान सभी आयामों में उनका विकास तीव्र गति से होता है। तंत्रिका तंत्र के क्षेत्र में शोधकार्य ने बच्चों के जीवन में प्रारम्भिक वर्षों की महत्ता को स्वीकृति दी है। इन शोधकार्यों के अनुसार इन वर्षों में मस्तिष्क का विकास तीव्र गति से होता है। जब तक बच्चा 6 वर्ष का होता है तब तक उसके 90 प्रतिशत दिमाग का विकास हो चुका होता है। परिणामस्वरूप, बच्चे के समग्र विकास की दृष्टि से, विशेष रूप से मस्तिष्क के विकास की दृष्टि से ये वर्ष अति महत्वपूर्ण हैं। वंशानुक्रम या वातावरण के कारण विकासात्मक प्रक्रिया में आई कोई बाधा उनके विकास को बाधित कर सकती है। घर और विद्यालय में स्वस्थ वातावरण का अभाव, उद्दीपन की कमी, अपर्याप्त पोषण, स्वास्थ्य की देखभाल में लापरवाही कुछ सामान्य कारक हैं जिनके कारण बच्चों में विकासात्मक विलम्बन होता है। इन वर्षों के दौरान बच्चे अनेक शारीरिक-गत्यात्मक, संज्ञानात्मक, सामाजिक-सांवेगिक और भाषा सम्बन्धी दक्षताओं का अर्जन करते हैं। अतः उन्हें सकारात्मक अनुभवों से पूर्ण उद्दीपक और सहभागिता वाला वातावरण मिलना चाहिए। ईसीसीई कार्यक्रमों के दौरान बच्चों को उपलब्ध करायी गयी गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक देखभाल और शिक्षा उन्हें समर्थ बनाती है कि वे अपनी उम्र के अनुसार ज्ञान और कौशल को प्राप्त कर सकें जिसके आधार पर बाद में वे औपचारिक स्कूल के वातावरण में समायोजन कर सकें।

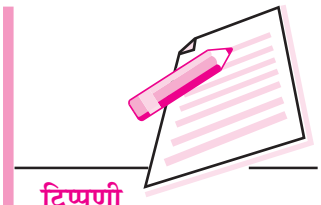

टिप्पणी

अत: बच्चों के एकीकृत, स्वस्थ और समग्र विकास के लिए ईसीसीई को प्राथमिक महत्व देना चाहिए। ईसीसीई के अलग-अलग सेवा प्रदाताओं को सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चों को समतामूलक और गुणवत्तापूर्ण ईसीसीई प्राप्त हो, खासकर उन बच्चों को जो इससे वंचित हैं।

1.2 ईसीसीई के उद्देश्य

ईसीसीई का उद्देश्य सभी बच्चों को उनके समग्र विकास के लिये निर्माणात्मक वर्षों के दौरान गुणवत्तापूर्ण देखभाल और अधिगम के अवसर उपलब्ध कराना है। राष्ट्रीय ईसीसीई के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2013 में इसके उद्देश्यों को परिभाषित किया गया है। आइए, इसी आलोक में ईसीसीई के उद्देश्यों को समझते हैं। ईसीसीई के उद्देश्य है–

- यह सुनिश्चित किया जाए कि बच्चे सुरक्षित, सलामत, स्वीकृत और सम्मानित महसूस करें।
- सुनिश्चित किया जाए कि बच्चों को अच्छा और संतुलित पोषण प्राप्त हो।
- बच्चों में स्वस्थ आदतों, स्वच्छता संबंधी चलन और खुद की सहायता कर सकने वाली कुशलताओं का विकास हो।
- उनकी भाषा, सम्प्रेषण और अभिव्यक्ति की क्षमता का सम्यक विकास हो।
- उनकी सम्भाव्य क्षमता के अनुसार शारीरिक और गत्यात्मक क्षमताओं का अनुकूलतम विकास किया जाए।
- सहभागिता पूर्ण उद्दीपक गतिविधियों में संलग्नता द्वारा बच्चों की संवेदी और संज्ञानात्मक क्षमताओं को पोषित किया जाए।
- बच्चों के भावानात्मक समायोजन को ध्यान में रखते हुए समाजोन्मुख कौशलों और सामाजिक दक्षताओं का विकास किया जाए।
- बच्चों को विद्यालयों में औपचारिक अधिगम के लिए तैयार किया जाए।

गतिविधि 1.1

अपने समुदाय के अभिभावकों से चर्चा कीजिए और पता लगाइए कि वे ईसीसीई के महत्व के बारे में कितने जागरूक हैं?

पाठगत प्रश्न 1.1

1. बताइए कि नीचे दिए गए कथन सत्य हैं अथवा असत्य।

   (क) बच्चों के जीवन के प्रारम्भिक वर्ष महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इस दौरान उनका सभी आयामों में तीव्र वृद्धि और विकास होता है।

   (ख) ईसीसीई का अभिप्राय बच्चों के जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में उनके स्वास्थ्य और पोषण संबंधी देखभाल एवं सीखने के शुरूआती अवसरों को उपलब्ध कराना है।

   (ग) घर और स्कूल का वातावरण बच्चों के विकास को प्रभावित नहीं करता है।

   (घ) वंशानुक्रम या वातावरणीय कारणों से बच्चों के विकास में आई बाधा उनके समग्र विकास को प्रभावित करती है।

   (ङ) एक सुरक्षात्मक और उद्दीपक वातावरण बच्चों के समग्र विकास के लिए आवश्यक है।

1.3 ईसीसीई के घटक

ईसीसीई एक एकीकृत कार्यक्रम है जिसके अनेक घटक हैं। ये सभी मिलकर बच्चों के विकास और कल्याण में योगदान करते हैं। आइए, इसके प्रमुख घटकों को विस्तार से समझते हैं।

चित्र 1.1 : ईसीसीई के घटक

टिप्पणी

1.3.1 स्वास्थ्य, पोषण और स्वच्छता

इस घटक में माताओं और बच्चों को नियमित स्वास्थ्य संबंधी हस्तक्षेप प्रदान करना शामिल है। इसमें प्रसव पूर्व और प्रसव बाद की देखभाल जैसे– पौष्टिक आहार, गर्भवती माता की प्रतिरक्षा हेतु टीकाकरण, स्वास्थ्य की नियमित जांच, तनावमुक्त वातावरण, अस्पताल या स्वास्थ्य केन्द्र में सुरक्षित प्रसव शामिल है।

इसी प्रकार, बच्चों को सन्तुलित और पौष्टिक भोजन, संक्रमण से संरक्षण, समय पर टीकाकरण तथा चिकित्सकीय देखभाल हेतु प्रावधान समेत स्वस्थ एवं स्वच्छ वातावरण प्रदान करने की जरूरत है।

1.3.2 देखभाल और संरक्षण

सभी बच्चों की अनुकूलतम वृद्धि और स्वस्थ विकास के लिए भौतिक और भावनात्मक रूप से सलामत, सुरक्षित एवं संरक्षित परिवेश अत्यन्त आवश्यक है। देखभाल और सुरक्षा वाला परिवेश प्रदान करना ईसीसीई का एक अभिन्न घटक है। बच्चों की देखभाल करने वालों के लिए आवश्यक है कि वे उनकी मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, सांवेगिक जरूरतों को पूरा करें। यह सुनिश्चित करने के लिए उनकी आवश्यकतानुसार उपयुक्त उद्दीपक दिया जा सकता है, सहयोगी और सुखद अन्त:क्रिया की जा सकती है, एक स्वस्थ और सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित किया जा सकता है।

1.3.3 प्रारम्भिक उद्दीपन

जैसा कि आपने पढ़ा है विकास शारीरिक-गत्यात्मक, सामाजिक-सांवेगिक, संज्ञानात्मक और भाषा के आयामों में होता है। ये सभी आयाम परस्पर संबंधित होते हैं। जीवन के प्रारम्भिक कुछ वर्षों में इन सभी आयामों में तीव्र वृद्धि और विकास होता है।

प्रारम्भिक उद्दीपन का अभिप्राय तीन वर्ष की आयु तक बच्चों को देखने, सुनने, स्पर्श करने, सूंघने और स्वाद लेने के उद्दीपन प्रदान करने से है। उद्दीपन का उद्देश्य बच्चों की संभाव्य क्षमता की वृद्धि करना है। इसके लिए माता-पिता, देखभाल करने वालों के साथ अन्त:क्रिया में सकारात्मक वृद्धि और परिवेश के खोज के अवसर उपलब्ध कराए जा सकते हैं। शोध कार्य बताते हैं कि उद्दीपन तन्त्रिका मार्गों के निर्माण द्वारा मस्तिष्क के विकास में भी मदद करता है जो भविष्य के अधिगम में सहायता करते हैं। अत: यह महत्वपूर्ण है कि प्रारम्भिक वर्षों में बच्चों को उद्दीप्त करने वाला वातावरण उपलब्ध कराया जाए जिसमें आयु के अनुसार विविध सामग्री, अनुभव और विकास के अवसर हों।

1.3.4 प्रारम्भिक अधिगम

ईसीसीई का एक महत्वपूर्ण घटक बच्चों के प्रारम्भिक वर्षों में उन्हें सीखने का अवसर उपलब्ध कराना है। तीन से छह आयु वर्ष के बच्चों को उम्र और विकास के अनुरूप सीखने का अवसर अनिवार्यत: उपलब्ध कराना चाहिए। यह जरूरी है कि इन बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध

कराई जाए जिसमें खेल, मूर्त अनुभव, अवलोकन, हस्तकौशल और प्रयोग शामिल हों। इससे उन्हें अपने बारे में, दूसरे के बारे में और अपने चारों ओर की दुनिया के बारे में सीखने का मौका मिलता है।

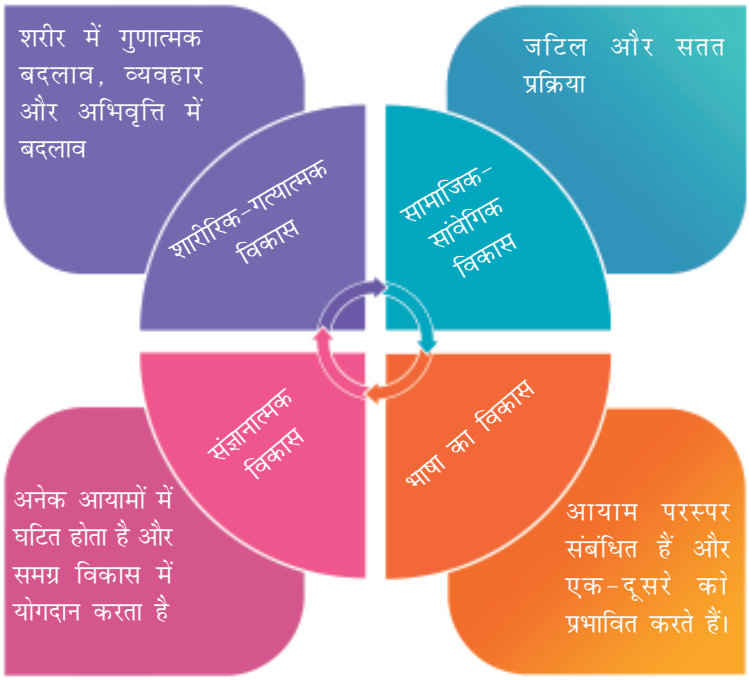

चित्र 1.2 : विकास की प्रक्रिया

शारीरिक-गत्यात्मक विकास

शारीरिक वृद्धि और विकास में लंबाई, भार और शरीर के अन्य अंगों में आनुपातिक परिवर्तनों को शामिल करते हैं। इसमें हड्डियों का विकास भी शामिल है। शरीर की पूरी संरचना हड्डियों के आकार, अनुपात और घनत्व पर निर्भर करती है। यह पूरे शरीर की आकृति को निर्धारित करती है। शारीरिक-गत्यात्मक विकास में स्थूल एवं सूक्ष्म मांस-पेशियों का विकास और हाथ-आंख के तालमेल की प्रक्रिया भी शामिल है। बच्चों में स्थूल मांस-पेशियों का विकास उन्हें रेंगने, चलने, दौड़ने, साइकिल चलाने, चढ़ने, कूदने आदि जैसी गतिविधियों में मदद करता है। सूक्ष्म मांस-पेशियों का विकास क्रेयान पकड़ने, रेखाएं खींचने, रंगने, धागे डालने, काटने और लिखने आदि जैसी गतिविधियों में मदद करता है।

सामाजिक-सांवेगिक विकास

सामाजिक विकास की प्रक्रिया द्वारा बच्चे सामाजिक मानक और सांस्कृतिक मूल्य ग्रहण करते हैं। स्वस्थ सामाजिक विकास बच्चों की मदद करता है कि वे परिवार, दोस्त और जीवन के अन्य लोगों से सकारात्मक संबंध का विकास कर सकें। संवेगात्मक विकास का

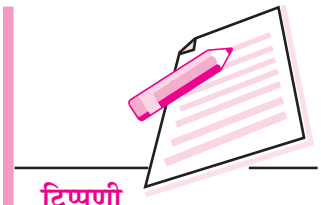

टिप्पणी

अभिप्राय बच्चों में संवेगों और मूल्यों का विकास है। बच्चों का जन्म आधारभूत संवेगों जैसे- प्रेम, भय, क्रोध और खुशी के साथ होता है। समय के साथ वे जटिल भावनाओं को विकसित करते हैं और वे भावनाओं को पहचानना, अभिव्यक्त और प्रबंध करना सीख लेते हैं।

संज्ञानात्मक विकास

यह सोचने, याद करने, पहचानने, वर्गीकरण करने, कल्पना करने, तर्क करने और निर्णय करने जैसी मानसिक और संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास की ओर संकेत करता है।

भाषा का विकास

यह भाषा को ग्रहण करने, समझने और उपयोग करने की प्रक्रिया है। इसमें सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशल शामिल हैं। यह कौशल बच्चों को संप्रेषण करने और उन्हें उनकी भावनाओं को व्यक्त करने में सहायता करता है।

पाठगत प्रश्न 1.2

1. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

   (क) ईसीसीई बच्चों के ..... विकास में सहायता करता है।

   (ख) भाषा विकास का अभिप्राय है भाषा को ग्रहण, ... और ..... करना।

   (ग) शारीरिक-गत्यात्मक विकास में ..... मांस-पेशियों का विकास और ..... समन्वयन की प्रक्रिया शामिल है।

   (घ) ..... सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल के उदाहरण हैं।

1.4 प्रारम्भिक हस्तक्षेप

इसके पहले कि हम प्रारम्भिक हस्तक्षेप के अर्थ और महत्व की चर्चा करें यह आवश्यक है कि हम विकासात्मक पड़ाव (माइलस्टोन) और विकासात्मक विलंबन का अर्थ जान लें।

विकासात्मक पड़ाव का अभिप्राय आयु के अनुसार विकास के प्रत्येक आयाम में अर्जित कौशल एवं दक्षताएं हैं। सामान्य परिस्थितियों में बच्चों से अपेक्षित है कि वे संबंधित आयामों में अपेक्षित विकासात्मक पड़ाव प्राप्त कर लें अर्थात् यह अपेक्षित है कि कुछ दक्षताएं एक खास आयु सीमा में ही प्राप्त होगी। यदि बच्चे विकास के सामान्य प्रारूप से पीछे रह जाते हैं तो उनका विकास विलंबित हो जाता है। इसका अर्थ है कि उन बच्चों ने निर्धारित समय पर विकासात्मक पड़ाव को प्राप्त नहीं किया। एक उम्र विशेष में जैसी आशा की जाती है वे उस दर से प्रगति करने

टिप्पणी

और विकासात्मक पड़ाव तक पहुंचने में असफल रहते हैं। बच्चों में विकास के विलम्बन के विभिन्न कारण हो सकते हैं जैसे कि वंशानुक्रम, प्रसव या जन्म के समय की जटिलताएं, बीमारी, जन्म के बाद की दुर्घटना।

बच्चों के विलंबित विकास के संकेतों का अवलोकन करना आवश्यक है जिससे उन्हें उपयुक्त एवं समयानुसार हस्तक्षेप उपलब्ध कराया जा सके। प्रारंभिक हस्तक्षेप का तात्पर्य बच्चों की विकासात्मक और अधिगम आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शीघ्रातिशीघ्र उठाए गए कदमों से है जिससे विकासात्मक विलंबन के प्रभाव को कम किया जा सके। इससे अभिप्राय है कि बच्चों को जीवन में शीघ्रातिशीघ्र सही हस्तक्षेप प्राप्त हो, जिस समय पर उनका मस्तिष्क नयी चीजें सीखने को सर्वाधिक ग्रहणशील होता है।

इसलिए बच्चों की स्वास्थ्य संबंधी जांच नियमित होनी चाहिए और उसका रिकॉर्ड भी रखा जाना चाहिए। उनकी स्वास्थ्य संबंधी जांच में सामान्य स्वरूप, शरीर की संरचना, धड़कनों का रिकॉर्ड, श्वसन दर, तापमान, लंबाई और वजन की माप, छाती और पेट की माप शामिल है। गले, आंख, कान, नाक, दांत, त्वचा, बाल, नाखून, दृष्टि, श्रवण, मानसिक प्रतिक्रिया, अगों का संचालन, पेशाब और मल का परीक्षण भी होना चाहिए। ये परीक्षण उनकी कमियों को शुरूआत में ही पहचानने में मदद करते हैं। यदि प्रारंभ में ही किसी समस्या को पहचाना जाता है तो उस पर तत्काल ध्यान दिया जा सकता है।

शारीरिक और संवेदी क्षति बच्चों के विकास में सबसे बड़ी बाधक है। उदाहरण के लिए, यदि किसी बच्चे में संवेदी क्षति है तो उसे अपने वातावरण के साथ अन्तर्क्रिया करने में समस्या का सामना करना पड़ेगा। यहाँ रिपेल प्रभाव (ऐसी परिस्थिति जिसमें किसी स्थिति के परिणामस्वरूप एक समस्या उत्पन्न हो, नवीन समस्या के परिणामस्वरूप पुन: एक नवीन समस्या उत्पन्न हो और यह क्रम आगे तक चलता रहे) हो सकता है तथा बच्चे का भाषा और सामाजिक-सांवेगिक विकास भी धीमा हो सकता है। यदि किसी बच्चे को बार-बार बुलाया जाता है फिर भी वह नहीं सुनता है तो इसका अर्थ हुआ कि उसकी सुनने की क्षमता में कोई समस्या है। इसी तरह यदि कोई बच्चा एक निश्चित आयु के बाद भी नहीं बोल पाता है तो उसे बोलने की कुशलता के विकास के लिए सहयोग की आवश्यकता होगी। अत: समय पर समस्या की पहचान बच्चों को प्रारम्भिक हस्तक्षेप प्रदान करने में सहायता करती है। यदि समय रहते बच्चों के विकासात्मक विलंबन पर ध्यान नहीं दिया जाता है तो यह तात्कालिक देरी स्थायी हो जाती है। देर से दिया हुआ कोई भी हस्तक्षेप अंतराल को भरने में पर्याप्त नहीं होगा। अपने देश में बच्चों की बड़ी संख्या है जो जीवन के शुरूआती वर्षों में खराब स्वास्थ्य, कुपोषण एवं घरेलू वातावरण में उद्दीपन के निम्न स्तर जैसे विभिन्न प्रकार के जोखिम से प्रभावित हो सकते हैं। इसलिये प्रारम्भिक विकासात्मक पिछड़ेपन की खोज और इसके लिये उचित कदम उठाए जाने ज्यादा जरूरी हैं।

1.5 भारतीय संदर्भ में ईसीसीई

बच्चों के प्रारम्भिक वर्षों के बारे में जागरूकता बढ़ रही है। बच्चों को उनके प्रारंम्भिक वर्षों में गुणवत्तापूर्ण देखभाल और सीखने के अवसरों को उपलब्ध कराने के महत्व को स्वीकारा जा

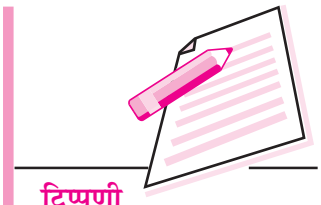

टिप्पणी

रहा है। अनेक शैक्षिक विचारकों ने ईसीसीई के क्षेत्र में उल्लेखनीय विचार दिए हैं। इन विचारकों ने विशेष रूप से बच्चे कैसे बड़े होते हैं, विचार करते हैं, विकास करते हैं जैसे प्रश्नों का उत्तर दिया है। भारतीय संदर्भ में प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा के बारे में गिजुभाई बधेका, ताराबाई मोदक और मारिया माण्टेसरी अग्रपंक्ति के विचारक हैं।

गिजुभाई बधेका का मानना था कि बच्चों के उचित विकास के लिए अच्छी शिक्षा आवश्यक है। इसके लिए आपने गुजरात के भावनगर में 1920 में 'बालमंदिर' नाम से पूर्व-प्राथमिक विद्यालय की स्थापना की।

ताराबाई मोदक ने भी भारत की पूर्व-प्राथमिक विद्यालयी शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वर्ष 1926 में इन्होंने तत्कालीन बम्बई (वर्तमान मुंबई) में नूतन बाल शिक्षण संघ की स्थापना की। यहाँ विभिन्न पृष्ठभूमियों के विद्यार्थी, गतिविधियों और वास्तविक जीवन के अनुभवों से सीखते थे।

मारिया मॉटेंसरी द्वारा प्रतिपादित मांटेसरी विधि पूर्व प्राथमिक विद्यालयी शिक्षा में प्रयुक्त होने वाला एक उपागम है। इसका दुनिया के सारे बच्चों के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। यह एक सुव्यवस्थित माहौल में बच्चों के स्वाभाविक विकास को सहयोग करने की विधि है।

महान भारतीय शैक्षिक विचारकों जैसे-महात्मा गांधी, रबीन्द्रनाथ टैगोर, जाकिर हुसैन के लेखन में भी जीवन के निर्माणात्मक वर्षों के दौरान बच्चों की देखभाल और शिक्षा पर ध्यान आकर्षित किया गया है। इनका विचार रहा है कि बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए और उनकी शिक्षा उनके सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण से घनिष्ठता से संबंधित होनी चाहिए। यह उस समुदाय से भी संबंधित होनी चाहिए जिसमें बच्चे और उनका परिवार रहते हैं।

वर्तमान में भारत में ईसीसीई से जुड़ी सेवाएं सरकारी, निजी और गैर सरकारी संगठनों द्वारा प्रदान की जाती हैं। भारत सरकार ने प्रारम्भिक बाल्यावस्था में दी जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता और पहुंच को सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए हैं। वर्ष 1975 में एकीकृत बाल विकास सेवा (आईसीडीएस) [Integrated Child Development Services (ICDS)] योजना का प्रारंभ हुआ। इसका उद्देश्य 6 वर्ष तक के बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण और विकास संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करना था। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और विकास के लिए एक एकीकृत और विशिष्ट कार्यक्रम था। इस कार्यक्रम में गर्भवती महिलाओं और स्तनपान करने वाली महिलाओं की देखभाल भी शामिल थी।

हाल के वर्षों में पंचवर्षीय योजनाओं में ईसीसीई पर ध्यान और प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा संबंधी राष्ट्रीय नीति, 2013 ईसीसीई की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास रहे हैं। इनके द्वारा प्रारम्भिक बाल्यावस्था के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण देखभाल और शिक्षा के अवसर सुनिश्चित हुए हैं।

निजी और गैर-अनुदानित केन्द्र जैसे- नर्सरी, किंडरगार्टेन और निजी विद्यालयों के पूर्व-प्राथमिक विद्यालयी विभाग भी देश में पूर्व-प्राथमिक विद्यालयी शिक्षा उपलब्ध कराते हैं। ये केन्द्र मुख्यत: नगरीय क्षेत्रों में अपनी सेवाएं उपलब्ध कराते हैं। इनके अलावा अनेक गैरसरकारी संगठन भी ईसीसीई से जुड़े कार्यक्रम संचालित करते हैं।

1.6 वैश्विक संदर्भ में ईसीसीई

ईसीसीई के महत्व को वैश्विक स्तर पर भी स्वीकारा गया है। यह 1989 में यूनाइटेड नेशंस कन्वेन्शन ऑन द राइट्स ऑफ द चाइल्ड (यूएनसीआरसी) अर्थात् संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार समझौते के साथ प्रारंभ हुआ। यह बाल अधिकारों के लिए अंतरराष्ट्रीय समझौता है। यह बच्चों के उत्तरजीविता, स्वास्थ्य, शिक्षा और संरक्षण के सन्दर्भ में बच्चों के कल्याण को संरक्षित करने और प्रोत्साहित करने का लक्ष्य रखता है।

''सबके लिए शिक्षा'' पर वैश्विक सम्मेलन, जोकि जोमेटियन, थाईलैंड, 1990 में हुआ था, ने बल दिया कि ''सीखना जन्म से प्रारंभ होता है'' और प्रारम्भिक देखभाल और शिक्षा को अनिवार्य रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिसे परिवार और समुदाय के सहयोग से प्रदान किये जाने की जरूरत है।

इसके साथ ही, वर्ल्ड एजुकेशन फोरम जो 2010 में डाकर, सेनेगल में हुआ था, में भी ईसीसीई के महत्व को दोहराया गया है। इसमें पुनः पुष्टि की गयी कि शिक्षा एक मूलाधिकार है और सभी बच्चों के लिए आधारभूत शिक्षा की सुनिश्चितता हेतु ''सबके लिये शिक्षा'' [Eduction For All (EFA)] के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये उद्देश्य निर्धारित किये गये।

हाल में ही वर्ष 2015 में कोरिया गणतंत्र के इंचियोन में हुए वर्ल्ड शिक्षा फोरम में शिक्षा को विकास का एक महत्वपूर्ण साधन मानते हुए सतत विकास के लिए 2030 तक के लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। सतत विकास का चौथा लक्ष्य है कि– ''वर्ष 2030 तक सभी लड़के और लड़कियों को गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था विकास, सुरक्षा और पूर्व प्राथमिक शिक्षा सुनिश्चित की जाए जिससे वे प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार हो जाएं।''

इन वैश्विक प्रतिबद्धताओं के समान्तर भारत भी गुणवत्तापूर्ण ईसीसीई की पहुँच की सुनिश्चितता हेतु प्रयास कर रहा है।

पाठगत प्रश्न 1.3

1. हाँ/नहीं पर निशान लगाइए–

   (क) भारत में ईसीसीई संबंधी सेवाएं सरकारी, निजी और गैर सरकारी संगठनों द्वारा प्रदान की जाती है। (हाँ/नहीं)

   (ख) विकासात्मक विलंबन का अभिप्राय है कि बच्चे विकासात्मक पड़ावों को अपेक्षित आयु पर प्राप्त कर लेते हैं। (हाँ/नहीं)

   (ग) आईसीडीएस प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए एकीकृत कार्यक्रम है। (हाँ/नहीं)

   (घ) प्रारम्भिक हस्तक्षेप का तात्पर्य है बच्चों की विकासात्मक और अधिगम आवश्यकताओं के सन्दर्भ में जितने जल्दी संभव हो उतने जल्दी कदम उठाना। (हाँ/नहीं)

   (ङ) सतत विकास का चौथा लक्ष्य छोटे बच्चों की शिक्षा से संबंधित है। (हाँ/नहीं)

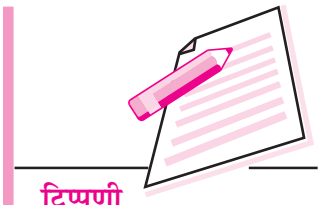

आपने क्या सीखा

इस पाठ में आपने सीखा कि–

- प्रारंभिक वर्षों का अभिप्राय जीवन के पहले 6 वर्षों से है।
- ईसीसीई का अर्थ जन्म से 6 वर्ष तक की आयु के बच्चों को उनके समग्र विकास के लिए दी जाने वाली देखभाल और सीखने के अवसरों से है।
- ईसीसीई में स्वास्थ्य, पोषण, देखभाल, सुरक्षा, प्रारंभिक उद्दीपन और प्रारंभिक अधिगम इसके घटक के रूप में शामिल हैं।
- विकास एक जटिल और सतत प्रक्रिया है। यह शारीरिक-गत्यात्मक, सामाजिक-सांवेगिक, भाषा और संज्ञानात्मक आयामों में होती है। ये आयाम परस्पर संबंधित होते हैं और बच्चे के समग्र विकास को प्रभावित करते हैं।
- बच्चों में विकास के विलंबन के अनेक कारण हो सकते हैं जैसे– वंशानुक्रम, गर्भावस्था या बच्चे के जन्म के समय की जटिलताएं, बीमारी या जन्म के बाद की दुर्घटनाएं आदि। बच्चों में विकासात्मक विलंबन को जानने के लिये प्रारम्भिक पहचान आवश्यक है। विकासात्मक विलंबन वाले बच्चों की विकासात्मक और अधिगम संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए समयानुसार हस्तक्षेप आवश्यक है।
- भारतीय संदर्भ में ईसीसीई के अन्तर्गत भारतीय शैक्षिक विचारकों के विचार और भारत सरकार की पहल जैसे– आईसीडीएस, 1975 एवं ईसीसीई की राष्ट्रीय नीति 2013 शामिल हैं।
- वैश्विक स्तर पर ईसीसीई की स्वीकृति पर बल के साथ सतत विकास का लक्ष्य-4 सभी छोटे बच्चों तक गुणवत्तापूर्ण विकास, देखभाल और पूर्व प्राथमिक शिक्षा की सुनिश्चित पहुँच का लक्ष्य रखता है जिससे वे 2030 तक प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार हो सकें।

पाठान्त प्रश्न

1. ईसीसीई के अर्थ और महत्व की व्याख्या कीजिए।
2. ईसीसीई के मुख्य लक्ष्यों को संक्षेप में लिखिए।
3. ईसीसीई के मुख्य घटकों पर चर्चा कीजिए।
4. बच्चों के समग्र विकास के लिए ईसीसीई क्यों महत्वपूर्ण है?
5. भारतीय संदर्भ में ईसीसीई का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
6. वैश्विक संदर्भ में ईसीसीई की चर्चा कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1

(क) सत्य

(ख) सत्य

(ग) असत्य

(घ) सत्य

(ङ) सत्य

1.2

(क) समग्र

(ख) संप्रेषण, अभिव्यक्ति

(ग) स्थूल एवं सूक्ष्म, आंख-हाथ

(घ) लिखना, रंगना, चित्र बनाना

1.3

(क) हाँ

(ख) नहीं

(ग) नहीं

(घ) हाँ

(ङ) हाँ

शब्दावली

- दक्षताएँ– किसी कार्य को करने के लिये आवश्यक क्षमताएं या कौशल।
- समग्र– बच्चों की शारीरिक-गत्यात्मक, सामाजिक-सांवेगिक, संज्ञानात्मक और भाषायी दक्षताओं का एकीकृत विकास।
- तंत्रिका विज्ञान (न्यूरोसाइंस)– तंत्रिका तंत्र और मस्तिष्क का अध्ययन।

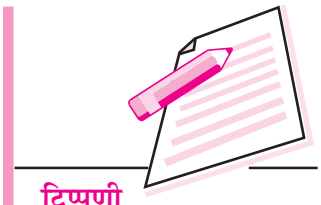

टिप्पणी

संदर्भ

- Inter-Agency Commission, WCEFA (2019). *World Conference on Education for All: Final Report.* Retrieved from http:/ /www.unesco.org/education/pdf/11_93.pdf
- Ministry of Women and Child Development. (1975). *Integrated Child Development Services Scheme*. Retrieved from https:// icds-wcd.nic.in/
- Ministry of Women and Child Development. (2013). *National Curriculum Framework for ECCE, 2013*. New Delhi: Government of India.
- Ministry of Women and Child Development. (2013*). National Early Childhood Care and Education Policy, 2013.* Retrieved from https://wcd.nic.in/ sites/default/files/National%20Early%20Childhood%20Care%20 and%20Education-Resolution.pdf
- National Council of Educational Research and Training. (2006). *Position Paper National Focus Group on Early Childhood Education*. Retrieved from http://www.ncert.nic.in/new_ncert/ncert/rightside/links/pdf/focus_group/early_childhood_education.pdf
- *UNESCO (2000). World Education Forum, Dakar, Senegal, 26-28 April 2000: Final Report*. Retrieved from https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000121117